श्री हनुमान जन्मोत्सव, मंगलवार व्रत, शनिवार पूजावार पूजा, बूढ़े मंगलवार और

श्री हनुमान जन्मोत्सव, मंगलवार व्रत, शनिवार पूजावार पूजा, बूढ़े मंगलवार और
अखंड रामायण केपाठ में प्रमुखता से गाये जाने वाली े
वाली
श्री हनुमान आरती है।

॥ श्री हनुमंत स्तुतत ॥

मनोजवं मारुत तुल्यवेगंेगं,
जितेन्द्रियंियं, बुद्धिमतां वरिष्ठम् ष्ठम् ॥

वातात्मजं वानरयुथ मुख्यं,
श्रीरामदुतं शरणम प्रपद्धे ॥े॥

॥ आरती ॥

आरती कीजै हनुमान लला की ।
दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ॥

जाकेबल से गिरवर काँपे ँपे ।
रोग-दोष जाकेनिकट न झाँके
ाँके॥

अंजनि पुत्र महा बलदाई
पुत्र महा बलदाई ।
संतन केप्रभु सदा सहाई ॥

आरती कीजै हनुमान लला की ॥

दे वीरा रघुनाथ पठाए ेवीरा रघुनाथ पठाए ।
लंका जारि सिया
या सुधि लाये े॥

लंका सो कोट समुद्र सी खाई सी खाई ।
जात पवनसुत बार न लाई ॥

आरती कीजै हनुमान लला की ॥

लंका जारि असुर संहारे असुर संहारे ।

सियाराम जी केकाज सँवारे ँवारे ॥

लक्ष्मण मुर्छित पड़े सकारे
े सकारे ।

लाये संजिवन प्राण उबारे वन प्राण उबारे ॥

आरती कीजै हनुमान लला की ॥

पैठि पताल तोरि जमकारे े
।
अहिरावण कीरावण की भुजा उखारे े ॥

बाईं भुजा असुर दल मारे े।
दाहिने भुजा संतजन तारे े
॥

आरती कीजै हनुमान लला की ॥

सुर-नर-मुनि जन आरती उतरें
जन आरती उतरें ।
जय जय जय हनुमान उचारें ॥

कंचन थार कपूर लौ छाई ।
आरती करत अंजना माई ॥

आरती कीजै हनुमान लला की ॥

जो हनुमानजी की आरती गावे े।
बसहिं बैकुंठ पर
ं बैकुंठ परम पद पावे े ॥

लंक विध्वंस किये रघुराई े
रघुराई ।
तुलसीदास स्वामी कीर्ति गाई ॥ति गाई ॥

आरती कीजै हनुमान लला की ।
दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ॥

॥ इति संपूर्णम् ॥णंम् ॥